कोलंबस का जहाजी सफ़र

महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रस्तावना

T-1

ए.पी.जे.अब्दुल कलाम आज़ाद जी कहतें हैं, “सोते समय जो ख़्वाब आतें हैं वे ख़्वाब नहीं हैं, ख़्वाब तो वे होतें हैं जो सोने नहीं देते हैं |”

इस दुनिया में जो लोगों ने अपनी अलग सोच के कारण प्रसिध्द हुए, उनकी भी यही अवस्था रही होगी क्योंकि उन्हें अपनी कल्पना को वास्तव में बदलना था | ऐसे व्यक्तियों पर एक जुनून सवार होता है,और अपने इसी जुनून में वे ऐसा महान काम कर जातें हैं और इतिहास पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं |

क्रिस्तोफर कोलंबस एक ऐसा ही दीवाना था, जिसने अपनी कल्पना को तथा अपने जुनून को ही अपने जीवन का मकसद बना लिया और एक अनजानी दुनिया से हमारी पहचान करवाई |

महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखा यह पाठ उसी दीवाने की जीवन यात्रा तथा उसके जुनून को दिखाता है |

T-2

पन्द्रहवीं शताब्दी यूरोप में “पुनर्जागरण ” का काल थी | इस शताब्दी में लोगों ने हर “क्यों” का जवाब ढूँढने की कोशिश की | इस शताब्दी में हर एक क्षेत्र में प्रगति हुई फिर वह चाहे कला हो या विज्ञान, इसी शताब्दी में नए-नए खोज हुए जिन्होंने मानवीय जीवन का रुख बदल दिया |

जैसे कला क्षेत्र में लिओनार्दो-दा-व्हिन्सी की मोनालिसा ने काफी धूम मचाई |

साहित्य क्षेत्र में विल्यम शेक्सपियर का बोलबाला था | आयझाक न्यूटन , गॅलीलियो जैसे लोगों ने अपनी सोच और खोज के द्वारा दुनिया को बहुत सारे ने सत्यों से अवगत करवाया |

अमेरिगो व्हेस्पुसी, वास्को-दी-गामा ने नई दुनिया की खोज की..... इन्हीं में महत्वपूर्ण नाम आता है, क्रिस्तोफर कोलंबस का...

T-3

बचपन

क्रिस्तोफर कोलंबस का जन्म इटली के जनेवा शहर में हुआ था, उनके माता-पिता व्यवसाय से जुलाहे थे | जब कोलंबस छह साल का हुआ तब उसे पढने के लिए पाठशाला भेजा गया | कोलंबस का पसंदीदा विषय भूगोल था | एक ओर वह अपने माता-पिता से कपड़े बुनने का काम सीख रहा था पर उसका मन समुद्र की ओर खींचता जा रहा था |

छुट्टी के दिन वह घंटों समुद्र के किनारे बिताता | वहाँ पर आए नाविकों से अलग-अलग देशों के किस्से सुनता विशेषकर भारत के.....

कोलंबस हमेशा सोचता, “क्या कभी ऐसा दिन भी आएगा,जब मैं जहाज़ में बैठकर समुद्रपार जाऊँगा और नए-नए देश देखूँगा?”

T-4

इटली से पुर्तगाल

चौदह साल के कोलंबस को एक जहाज़ पर नौकरी मिल गई | उसने अफ्रीका के देशों की सैर की,व्यापार किया, लड़ाइयों में भाग लिया | वक्त के गुजरते कोलंबस एक साहसी नाविक बन चुका था |

अपने सपने को पूरा करने के लिए कोलंबस इटली छोडकर पुर्तगाल में जा बसा | उन दिनों पुर्तगाल बहादुर नाविकों का घर था जो लंबी-लंबी यात्राएँ किया करते थे,ये नाविक भारत का समुद्री मार्ग ढूँढना चाहते थे | अब कोलंबस भी उनमें शामिल हो गया |

T-5

कोलंबस का विचार

कोलंबस सोचता था कि नाविक पूरब तक जाकर आ गए हैं परन्तु भारत को नहीं ढूँढ़ पाएं, संभवतः पश्चिम की ओर जाया जाए तो भारत देश अधिक नजदीक होगा |

उसकी सोच का आधार था यह सत्य कि “पृथ्वी गोल है”.....

कोलंबस ने इस विषय में काफी तैयारी की, उसने भौगोलिक परिस्थितियों का अंदाजा लिया, समुद्री जवायु का अध्ययन किया| उसने एक विस्तृत योजना बनाई |

कोलंबस जितना इसके बारे में सोचता था यह विचार अधिकाधिक गहरा होता चला गया. जब उसे अपने विचार पर विश्वास हो गया तब उसने पूर्तगाल के बादशाह से सहायता माँगी | वह चाहता था कि पुर्तगाल का बादशाह उसे जहाज़ दे, नाविक दे और धना दे, जिससे पश्चिमी समुद्र को पार के भारत जाने का मार्ग ढूँढ़ निकाले | पर बादशाह ने उसकी माँगों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया |

T-6

कोलंबस का स्पेन आना

हारकर कोलंबस को स्पेन के बादशाह से मदद मांगनी पडी जो काफ़ी मन्नतों के बाद तैयार हुआ | परन्तु कोई भी नाविक कोलंबस के साथ जाने के लिए तैयार नहीं हो रहा था | लोगों ने सुन रखा था कि पश्चिमी समुद्र में बड़े-बड़े तूफ़ान उठते हैं | अतः अपनी जान जोखिम में डालने के लिए कोई भी तैयार नहीं था | अंत में बादशाह की आज्ञा से जेल खाने के कुछ बंदियों को इस यात्रा के लिए तैयार किया गया |

T-7

3 अगस्त १४९२

आखिर वह दिन आ ही गया जब कोलंबस अपनी महत्वाकांक्षी यात्रा पर निकला | तट पर लाखों की संख्या में लोग आए थे | लेकिन किसी में भी उत्साह नहीं था | नाविक अपने बन्धुओं से गले मिलकर रो रहे थे क्योंकि अब उन्हें जीवित लौटने की आशा नहीं थी |

नाविक इतने डरे हुए थे कि तट के ओझल होते ही वे कोलंबस से वापस लौटने की प्रार्थाना करने लगे |

लेकिन अपनी यात्रा के प्रति उत्साही कोलंबस किसी की बात सुनने वाला थोड़े ही था |

T-8

नाविकों की मुसीबतें

जैसे-जैसे दिन गुजरते गए नाविकों का धैर्य कम होता गया | जमीन कहीं दिखाई नहीं देती थी, चारों ओर बस पानी ही पानी | कहाँ जाना है पता नहीं.. उपर से हिन्द महासागर में उठने वाले बड़े-बड़े तूफ़ान.....

बच्चों, यह उस जमाने की बात है जब आधुनिक तकनिक थी ही हीं, छोटी-छोटी नावों में इतने दूर का सफ़र करते-करते नाविकों की हिम्मत ने जवाब दे दिया |

सबको लगने लगा कि कोलंबस पागल हो चुका है और उन्हें मौत के मुंह में ले जा रहा है | सबने एक साथ जाकर कोलंबस से बात करने की सोची |

T-9

कोलंबस और नाविकों की बातचीत

नाविकों ने आगे जाने से मना कर दिया और कोलंबस से लौट चलने की बात कही | कोलंबस ने उनसे कहा कि अगर वे इस प्रकार लौट आए तो स्पेन में उनके नाम पर छीः थू होगी....

फिर भी नाविक कोलंबस की बात सुनने को राज़ी नहीं हुए. तब कोलंबस ने उनसे तीन दिन की मौहलत माँग ली |

तीन दिन बाद भी जब कोलंबस लौटने का नाम नहीं ले रहा था तब सभी नाविकों ने सोचा कि प्रातः होते ही कोलंबस को समुद्र में फेंक देंगे और जहाज़ का मुख स्पेन की ओर मोड़ देंगे |

T-10

लेकिन जैसे ही दिन चढा नाविकों को पाने में तैरती हुई लाठी दिखाई दी | लकड़ी का तख्त,लाल बेरों की एक झाड़ी भी दिखाई दी | कुछ पक्षी आकाश में उड़ते नज़र आए, उन्हें विशवास हो गया कि धरती कहीं समीप ही है | दिन-भर कोलंबस दूरबीन लिए खडा था | पर जमीन मिलने की आशा कम होती दिखाई दे रही थी | एक टिमटिमाती रोशनी दिखाई दी थी पर अब वह आँखों से ओझल हो गई |

कोलंबस का भी मन डावाँ-डोल होने लगा, उसे भी लगने लगी कि कहीं उसकी सारी मेहनत पर पानी तो नहीं फिरा है |

तभी जहाज़ से बंदूक चलने की आवाज़ आई..... यह जमीन दिखने की सूचना थी |

T-11

१२ अक्तूबर १४९२

सूरज की पहली किरण के साथ कोलंबस और उसके साथियों को जमीन दिखाई दी..... वह दिन था ..... १२ अक्तूबर १४९२... कोलंबस ने अपनी सपना सच कर दिखाया... उसे लग रहा था कि वह हिन्दुस्थान पहुंच गया है, पर वास्तव में उसने नई दुनिया खोज निकली थी |

कोलंबस वास्तव में अमरिका के पूर्वी तट पर पहुंच गया था, पर उसे लग रहा था कि वह भारत पहुंच गया है.....जिन द्विपों की खोज कोलंबस ने की थी वे द्विप थे “बहामा”.....

T-12

उद्देश्य

“लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती”

अक्सर हम गलतियों से डरकर कोशिश करते ही नहीं है और हमारा अपने सपनों पर भी विश्वास नहीं होता | एक बार का अपयश हमारे मन में स्वयं के बारे में ही संदेह उत्पन्न कर देता है | नकारात्मक विचारों से हमारा मन भरा जाता है और हम अपने सपने से कोसों दूर निकल आतें हैं. तब हमारे मन में मात्र एक ही सवाल रह जाता है..... “काश” मैंने कोशिश की होती. लेकिन तब तक वक्त रेत की तरह हाथ से फिसल जाता है|

कोलंबस जैसे व्यक्तित्व हमें अपने सपनों से प्यार करना सीखाते हैं....कोशिश करने का उत्साह बढ़ाते हैं.. कोलंबस ने परिस्थितियों से हार नहीं मानी अपने इरादों पर उसका विशवास था | इसलिए वह ऐसा कारनामा कर पाया जिसकी कल्पना भी किसी ने न की थी |

दूसरी बात उस समय के सारे नाविक अपनी नावें किनारे के पास-पास ही चलाते थे | किसी में भी इतनी हिम्मत नहीं होती थी कि वह अपनी नाव बीच समुद्र में ले जाएँ | परन्तु यह हिम्मत कोलंबस ने दिखाई और उसे नई दुनिया का पता चल गया |

बच्चों, जब हम बना-बनाया रास्ता छोडकर अपना खुद का रास्ता बनाते हैं तब प्रथम तकलीफ आवश्यक होती है.... परन्तु इसका परिणाम बेहद सुखदायी होता है |

हमें अपने सपनों पर विश्वास रखना चाहिए और अविरत अपने सपनों के लिए प्रयत्नरत रहना चाहिए |

परियोजना

- वास्को-दी-गामा, अमेरिको वेसिपुसी ऐसे ही खोजी और साहसी व्यक्ति थे जिन्होंने नई दुनिया की खोज की, आप को एन लोगों के खोज के विषय में जानकारी प्राप्त करनी है तथा उनके द्वारा खोजे गए मार्ग को दुनिया के नकाशे पर बनाकर हमें भेजना है |
-

Worksheet

१. कोलंबस के मन में कौन-से विचार थे? इन विचारों का आधार क्या थे?

२. आपके विचार से जेलखाने के बंदियों को यात्रा के लिए तैयार क्यों किया होगा?

३. कोलंबस के साथ जो नाविक थे उनकी मनोदशा का वर्णन अपने शब्दों में करें|

४. कोलंबस ने वास्तव में क्या खोजा था?

मूल्यांकन

५. इस संसार को कोलंबस की क्या देन है?

६. पाठ के आधार पर इस संपूर्ण यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में करें|

१. कोलंबस के माता-पिता कौन थे?

अ. जुलाहा थे

आ. बढाई थे

इ. नाविक थे

ई. मुनीम थे

२. आख़िरकार कौन-से राजा ने कोलंबस की मदद की?

अ. इटली के राजा ने

आ. पुर्तगाल के राजा ने

इ. स्पेन के राजा ने

ई. इंग्लैण्ड के राजा ने

३. कोलंबस ने अपनी यात्रा की शुरुवात कब की?

अ. २ अगस्त १४९२

आ. ३ अगस्त १४९२

इ. ३ अगस्त १४५०

ई. ३ अगस्त १९४०

४. कोलंबस को कब जमीन दिखाई दी?

अ. १२ अक्तूबर १४९२

आ. १२ अक्तूबर १४५०

इ. १५ अक्तूबर १४९२

ई. १२ अक्तूबर १९५०.